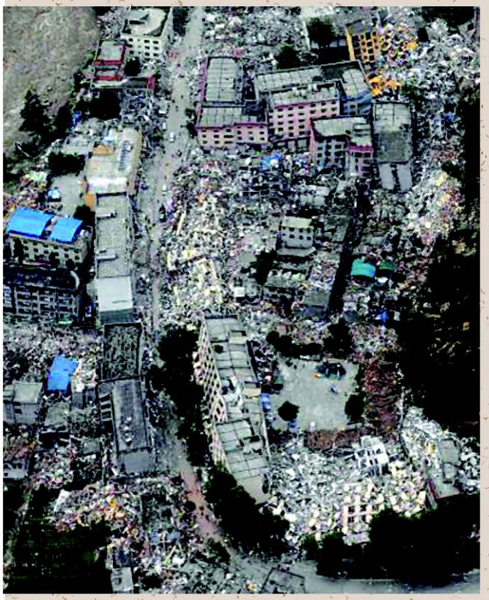

भूकम्प

12 मई 2008 को दोपहर ढाई बजे चीन के सिचुहान क्षेत्र में एक बड़ा भूकम्प आया। इतना भयानक था भूकम्प कि 47 लाख से ज़्यादा घर गिर गए। 80 हज़ार से ज़्यादा लोग मारे गए। लाखों लोगों ने अपने रिश्तेदार, दोस्त, घर, सामान सब खो दिया। पर जो नहीं खोया वो था उनका सब्र, उनका विश्वास। और जो पाया वो था इतने सारे लोगों का साथ। भूकम्प आने के 24 घण्टों के भीतर इतने लोगों ने खून दान दिया कि सभी बड़े ब्लड बैंकों में और खून इकट्ठा करने की जगह ही नहीं बची। सभी चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध थीं। सैनिक थे, पैदल, गाड़ियों से आते लोग थे, आम जनता, डॉक्टर सभी थे। सेना रात-दिन मलबे में दबे लोगों को निकालने के काम में जुटी रही।

भूकम्प के 24 घण्टे बाद यह बच्चा मलबे से बाहर निकाला गया। एकदम ठीक-ठाक। उसकी माँ नहीं बच पाई। 3-4 महीने के इस बच्चे की माँ उस पर झुकी रही। बच्चे के झबले में माँ का मोबाइल मिला। उसमें एक सन्देश था – मेरे बच्चे अगर तुम बच गए तो याद रखना माँ तुम्हें प्यार करती रहेगी हमेशा...

26 साल की युआन वेन्टिन पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाती थीं। जैसे ही भूकम्प आया वो दौड़कर तीसरी मंज़िल में अपनी कक्षा में गई। और जल्दी-जल्दी बच्चों को बाहर निकालने लगी। अभी कुछ बच्चे कक्षा में बचे थे कि इमारत गिर पड़ी। अपनी ज़िन्दगी के आखरी पलों में वो अपने शरीर की आड़ से बच्चों को बाहर निकाल रही थीं।

खबर पाते ही 60 साल के यू चाओ सिचुहान पहुँच गए। यू चाओ जिनका खुद खाने-रहने का ठिकाना नहीं है उन्होंने पाई-पाई करके जमा की अपनी कुल पूँजी 105 युआन दान में दे दी।

तीन साल की सॉन्ग ज़िनींग 2 दिन बाद घायल अवस्था में मलबे से निकाली गई। उसके माँ-पिता ने एक-दूसरे को पकड़कर बच्ची के ऊपर छत-सी तान दी थी। वे दोनों तो बचे नहीं पर बच्ची बच गई।

साभार - इंटरनेट